

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



Founder's Essay

मन जो प्रतीक्षा करने का इच्छुक है

मुझे लगता है कि दूसरों को बढ़ने में सहायता करने में सबसे महत्वपूर्ण बात मन है जो उसमें सतत लगे रहने को तैयार है। किसी के दोषों को सुधारना और बुरी आदतों को बदलना उतना आसान नहीं है। यहाँ तक कि जब एक कंपनी का बॉस कर्मचारियों को कई चेतावनियाँ देता है या उन्हें सावधान करता है कि वे एक निश्चित प्रकार की गलती नहीं दोहरायें, तो वे हमेशा तत्क्षण अपने तरीके बदलने में सक्षम नहीं होते हैं।

हम अक्सर माताओं को अपने बच्चों को फटकार लगाते हुए ऐसा कहते सुनते हैं कि, "तुमने मुझसे कहा था कि तुम समझ गए हो, क्या तुम नहीं?" या "यदि मैं तुझको कहता रहूँ, तो क्या तुम इसे कर सकोगे?" अपने मस्तिष्क से कुछ समझने और वास्तव में उसे कार्यरूप देने में सक्षम होने के बीच लोक में बहुत अन्तर है।

उदाहरण के लिए किसी एक सरल चीज को समझें, अपनी दायीं

ओर की आलमारी से बाईं ओर ले जाना है। दायीं ओर तक पहुँचने की उस लंबी-अभ्यस्त आदत से खुद को छुटकारा दिला पाना इतना आसान नहीं है। यह कुछ ऐसा है कि जिस दोष को हम बार-बार करते हैं, उसमें बदलाव कम कम आता है।

जब तक हम लोगों की प्रगति को उदार हृदय से तथा सहानुभूतिपूर्वक नहीं देखते हैं, वे कभी नहीं बढ़ेंगे। यहाँ तक कि यदि आपके पास स्वयं प्रबुद्ध व्यक्तित्व है, तो भी मैं आपको याद कराना चाहता हूँ कि कितने लोगों ने आपको देखा है और तब तक आपकी प्रतीक्षा की है, जब तक उस ऊँचाई को नहीं छू लेते हैं।

निक्क्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 218 - 219

Living the Lotus Vol. 166 (July 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

स्वच्छन्द एवं अबाधित जीवन

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिशशो कोसेइ काइ



स्वच्छन्द एवं अबाधित होने का सच्चा अर्थ

बहुत से लोग सोचते हैं कि यदि वे स्वच्छन्द एवं अबाधित जीवन जी सकते हैं, तो वे बहुत खुश होंगे। एक अलग दृष्टिकोण से देखा जाए, तो वे लोग सोचते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में कितना बाधित एवं असंतोष अनुभव करते हैं।

एक अर्थ में, हालाँकि, यह असंतोष स्वाभाविक है। हम स्वच्छन्दता के विषय में सोच सकते हैं कि हम जैसा चाहते हैं, वैसा करने में समर्थ है और जब वास्तविक जीवन में हमारी उम्मीदें पूर्ण नहीं होती हैं, तो हम असंतुष्ट, नाराज और चिड़चिड़ा हो जाते हैं। हम पीड़ित होते हैं, जो हमें सोचने पर मजबूर करता है कि हम बाधित हो गए हैं। कोई यह सोच सकता है कि मुक्त होने की कोशिश करने से हम वास्तव में स्वयं के लिए बाधाएँ खड़ा कर रहे हैं, लेकिन वास्तव में, जिस क्षण हमें बाधा का भान होता है, वह एक सुअवसर हो सकता है, यदि हम अपने जीवन शैली को एक ऐसा रूप दें, जिसमें स्वच्छन्दता एवं अबाधिता सच्चे अर्थ में प्रदर्शित हो।

बौद्ध धर्म में, इच्छाओं के प्रति लगाव का पूरी तरह लोप होना और मन के जोर से वही करने को जो अच्छा लगे, उसे “हर्षोल्लास” कहते हैं-मन की वह स्थिति जिसमें किसी भी चीज के प्रति कोई आसक्ति नहीं है और इसे स्वच्छन्द और अबाधित माना जाता है। यह बिना किसी चिन्ता या दुःख के आराम और सहजभाव का अनुभव करने का क्षेत्र है।

बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को कभी-कभी जापान में कांजीजाई बोसात्सु (बोधिसत्व अबाध्य चिन्तक) कहा जाता है, और उनके नाम के इस संस्करण में “अबाध्य” शब्द पीड़ित लोगों के उद्धार करने की उनकी शक्ति एवं कार्य का संकेत देता है जब वे उनका कारुणिक आह्वान करते हैं। दूसरे शब्दों में, स्वच्छन्द और अबाध्य होने का सही अर्थ ऐसी जीवन शैली में है जिसमें व्यक्ति अन्य लोगों की सदा चिन्ता में रहकर स्वयं के जीवन को उदात्त बनाने का लक्ष्य रखता है।





त्रिविध लोक अपना क्षेत्र है

यह उद्धरण पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-3 में दिखाई देता है, "एक दृष्टान्त": "मैं इन जीवित प्राणियों का पिता हूँ। मुझे उन्हें इस तरह की पीड़ा और कठिनाई से बाहर निकालना है और उन्हें असीम अपरिमेय बुद्ध ज्ञान का आनंद देना है ताकि वे इसका आनंद ले सकें।" इस उद्धरण का अर्थ है कि हम जीवित प्राणियों के लिए (जो अक्सर सोचते हैं कि हम बाधित हैं और दुः खों से बचने की आशा करते हैं) बुद्ध के "ज्ञान का आनंद" देते हैं-यह कि, वह हमें जीने का एक मार्ग बताता है जो वास्तव में स्वतंत्र और अबाधित है। लेकिन वास्तव में ज्ञान का यह आनंद क्या है?

आपके लिए एक उदाहरण है, कल्पना करें कि अभी, आपकी आँखों के सामने दो डोनट हैं। वे आपको दिया गया है। हालाँकि, आपके आस-पास तीन अन्य लोग हैं जो आपके जैसे ही भूखे हैं।

सूत्रों के अनुसार, "सभी दुः खों का कारण/ तृष्णा और इच्छा हैं।" स्वयं डोनट खा लेने का भाव तृष्णा है, साथ ही उन लोगों की नाराजगी और ईर्ष्या (घृणा) का भाव जिन्हें वह प्राप्त नहीं हुआ, दोनों दुख के रूप हैं। इसलिए, आप कह सकते हैं कि बुद्ध से सभी के लिए पर्याप्त मात्रा में डोनट का आग्रह ज्ञान की खुशी है। यह ऐसा नहीं है, हालाँकि, जैसा कि ज्ञान के आनंद का वास्तविक अर्थ अपर्याप्तता की पीड़ा को आनन्द स्वीकार करने में सक्षम होना है, जो स्वयं और दूसरों को सुधार की ओर ले जाता है।

स्वच्छन्दता के भाव पर लौटने को हम कह सकते हैं कि हम घटनेवाली मुश्किल चीजों को सकारात्मक रूप से स्वीकारने में स्वतंत्र हैं। यहाँ तक कि जब हम पीड़ित हैं, तब भी हम उस पीड़ा को सहजभाव से स्वीकार कर खुशी में बदल सकते हैं, अपनी आँखों के सामने छोटे-छोटे सुखों का स्वाद ले सकते और अन्य लोगों को अपने आनंद में साथ कर सकते हैं। मुझे लगता है कि यह जीवन का एक तरीका है जो वास्तव में स्वतंत्र और अबाधित है।

"एक दृष्टान्त" में गाथा की ये पदें भी हैं: "अब यह त्रिविध लोक / सारा मेरा क्षेत्र है," इसका अर्थ है, "यह संसार और सम्पूर्ण ब्रह्मांड मेरा है।" हम स्वयं के बारे में ऐसी बातें नहीं सोच सकते हैं, लेकिन हम में से प्रत्येक ने प्रकृति के एक अंश के रूप में एक अद्वितीय, बहुमूल्य जीवन प्राप्त किया है, सब कुछ के साथ तादात्म्य है। दूसरे शब्दों में, सम्पूर्ण ब्रह्मांड आपके साथ एक है; यह पूरी तरह से आपका है। गाथा के ये पद बुद्ध का एक संदेश है, जो हमें आश्चर्य कर रहा है कि जब हम इस सत्य को समझेंगे, हम हमेशा ज्ञान और करुणा से भरे कदम उठा पाएँगे- और यही बुद्ध चाहते हैं कि हम करें।

इस विचार को ध्यान में रखते हुए, एक बात मैं पूछना चाहता हूँ। पहले बताएँ गए दो डोनट्स के साथ आप क्या करेंगे?

कोसेइ से, जुलाई 2019



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र

अध्याय 9: शैक्ष्यों एवं अशैक्ष्यों को मिला आश्वासन



पाँच सौ शिष्यों को बुद्धत्व प्राप्त का आश्वासन मिलने के उपरान्त, राहुल (शाक्य मुनि के एकमात्र पुत्र) एवं आनन्द (उनके चचेरे भाई), जिनकी गणना दस प्रमुख शिष्यों में थी, दोनों ने स्वयं को छुटा हुआ अनुभव किया और विस्मित थे कि क्यों वे नहीं सीधे नामित हुए। जब वे बुद्ध के समक्ष गए और अपने नाम को सम्मिलित करने का आग्रह किया, तब बुद्ध ने असंख्य शैक्ष्यों एवं अशैक्ष्यों को बुद्धत्व प्राप्ति का आश्वासन देते हुए, दोनों में प्रत्येक को नाम से आश्वासन दिया। “शैक्ष्य” शब्द से तात्पर्य उस चरण से है जिसमें किसी का अध्ययन पूर्ण हो गया है, जबकि अशैक्ष्य धार्मिक शिक्षा को आगे बढ़ाने के मार्ग पर है।

ऐसा लगता है कि यह इस छोटे अध्याय की एकमात्र सामग्री है, लेकिन इस सरल सामग्री से सीखने के लिए दो महत्वपूर्ण सीख हैं।

एक बार हमें अपने बुद्ध-स्वभाव का भान हो जाता है, हम बुद्ध बन सकते हैं

पहली सीख उन लोगों को दिए गए आश्वासन में निहित है जो अभी भी प्रशिक्षण की प्रक्रिया में थे - वे प्रशिक्षणार्थी मार्गदर्शन में थे और अभ्यास के द्वारा सीख रहे थे। हालाँकि यह अजीब लग सकता है कि किसी को किसी के बुद्ध स्वभाव को समझने के लिए उसे बुद्ध बनने की आवश्यकता है, सावधान सोच यह स्पष्ट करता है कि इसमें कुछ भी अजीब नहीं है। चूँकि सभी लोग में बुद्ध-स्वभाव समान रूप से निहित है, एक बार किसी को अपने बुद्ध-स्वभाव के बारे में स्पष्ट रूप से ज्ञान हो जाता है, वह व्यक्ति बुद्ध बनने में सक्षम है।

हमारे लिए उन निकटस्थों को सिखाना और बदलना कठिन है

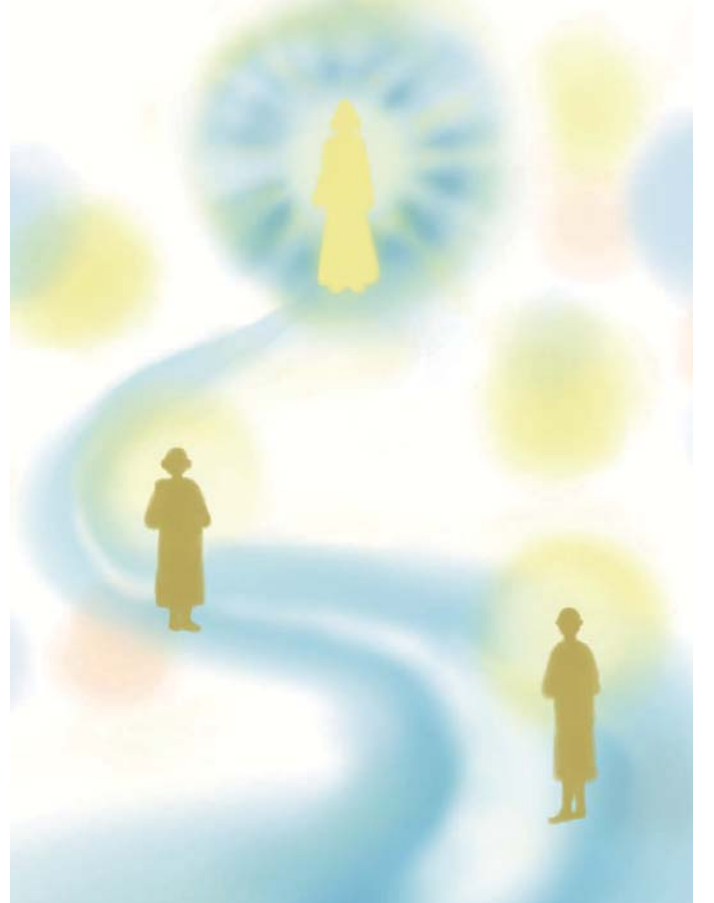
दूसरे सीख में यह प्रश्न उठता है कि राहुल और आनंद के आश्वासन क्यों टाल दिया गया था और फिर श्रावकों के आश्वासन के साथ दिया गया जो अभी भी अशैक्ष्य थे।

यहाँ, हमें शाक्यमुनि की सोच को समझने का प्रयास करने की आवश्यकता है। राहुल उनका पुत्र और आनंद उनका चचेरा भाई थे। दोनों शाक्यमुनि के निकटतम थे, यह तथ्य अपने आप में उनके

अभ्यास में बाधा का संकेत हो सकता है। इस तथ्य को सभी के सामने स्पष्ट करने हेतु शाक्यमुनि द्वारा जानबूझकर उनको आश्वस्त करने में विलम्ब का कारण हो सकता है।

राहुल के मामले में, हालाँकि उनके पिता एक महान व्यक्ति हैं और हालाँकि वे बाहरी लोगों द्वारा पूजनीय हैं, वह पहले और सबसे पहले एक पिता हैं, और राहुल उन्हें उसी प्रकाश में नहीं देख सकता है जिस प्रकाश में अन्य लोग उन्हें देखते हैं। यह भी बहुत संभव है कि बच्चा यह मान लेगा कि उसके माता-पिता हमेशा उनसे प्यार करेंगे और संभवतः उसके साथ अधिमान्य व्यवहार करेंगे।

आनंद के मामले में, बीस या अधिक वर्षों से, वे हमेशा बुद्ध के साथ साथ रहा करते, स्वयं उनका भोजन लगाकर प्रतीक्षा करते, और उनके स्नान करने के समय उनकी पीठ को रगड़कर उस पर पानी डालते थे। अतः शाक्यमुनि बुद्ध की महानता और मनुष्य के रूप में शाक्यमुनि के बीच फर्क करना उनके लिए कठिन था। आनंद





के लिए यह मात्र स्वाभाविक था कि उन्हें अन्य शिष्यों की तरह बुद्ध पर भरोसा करने में कठिनाई होती।

शायद उन सबको, जो हमारे सबसे निकटस्थ हैं, सिखाना हमारे लिए सबसे मुश्किल है, जैसे कि पति, पत्नी, बच्चे या माता-पिता। हम केवल मौखिक अनुनय के द्वारा से उन्हें निर्देश नहीं दे सकते हैं; हमें उनके सामने दैनिक जीवन में जीवित बौद्ध धर्म का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए और उन्हें अपने वास्तविक व्यवहार से प्रभावित करना चाहिए। हम अपने परिवारों या साथी श्रमिकों को प्रभावित नहीं कर सकते हैं, यदि हमारे कार्य, हालाँकि कभी कभी उत्तम होते हैं, स्वार्थी या अशोभनीय हैं और सदा अच्छा उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते हैं।

यद्यपि, बौद्ध परंपराओं के अनुसार राहुल और आनंद ने अन्य महान शिष्यों के बाद में बोधिज्ञान प्राप्त किया, वे पूर्व अध्याय के पाँच सौ शिष्यों से पहले बुद्ध हो जायेंगे। यह तथ्य है कि शाक्यमुनि ने अन्य वरीय शिष्यों को आश्वस्त करने के बाद उनके बुद्धत्व पर चर्चा की हो, उनसे संबंधित समस्याओं के बारे में उनकी गहरी चिंता का यह परिणाम हो सकता है।

मूल व्रत

इस अध्याय में एक और महत्वपूर्ण सीख दिया गया है, जो शाक्यमुनि के शब्दों से परिलक्षित है, "ऐसा उनका मूल व्रत था," जिसे उन्होंने आनंद को बुद्धत्व का आश्वासन देते हुए आठ हजार नव दीक्षित बोधिसत्वों से कहा था।

यह "मूल व्रत" सभी जीवित प्राणियों को मुक्ति के लिए बुद्ध और बोधिसत्वों द्वारा अपने पूर्व जन्मों में लिया गया व्रत है। ऐसा कहा जाता है कि शाक्यमुनि के व्रत पाँच सौ अंगों से बने थे, अमिताभ बुद्ध के व्रत अड़तालीस अंगों से बने थे और भैषज्यगुरु के व्रत बारह अंगों से बने थे।

यद्यपि आठ हजार नव दीक्षित बोधिसत्वों ने इस लोक में अपने पुनर्जन्म के बाद से अपनी सभी यादों को भूला दिया था, उन्होंने सभी लोगों को निर्देश देने और उन्हें सम्पूर्ण बनाने के लिए पूर्व जीवन में एक व्रत लिया था। पुण्डरीक सूत्र के धर्मोपदेश को सुनकर



उन्हें अपने मूल व्रत का स्मरण हो गया और उसका नवीनीकरण हो गया। यह तब हुआ जब उन्हें अंततः बुद्धत्व का आश्वासन मिला।

वही हम पर भी लागू हो सकता है। उस मूल व्रत में वापस आनेवाला व्यक्ति सच्चा बोधिसत्व या धर्मभाणक के अलावा और कोई नहीं है।

यह उस पाठ का हिंदी अनुवाद है जिसका जापानी मूल होक्के सानबुक्यो में संस्थापक निक्क्यो निवानो के नाम "प्रत्येक वस्तु का सार एवं उसकी रूपरेखा" शीर्षक से (कोसेइ प्रकाशन, 1991 [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 94-98) प्रकाशित है।

मैं उस लोक की ओर देख रहा हूँ जो स्वयं एवं दूसरों के लिए मुक्ति लाता है

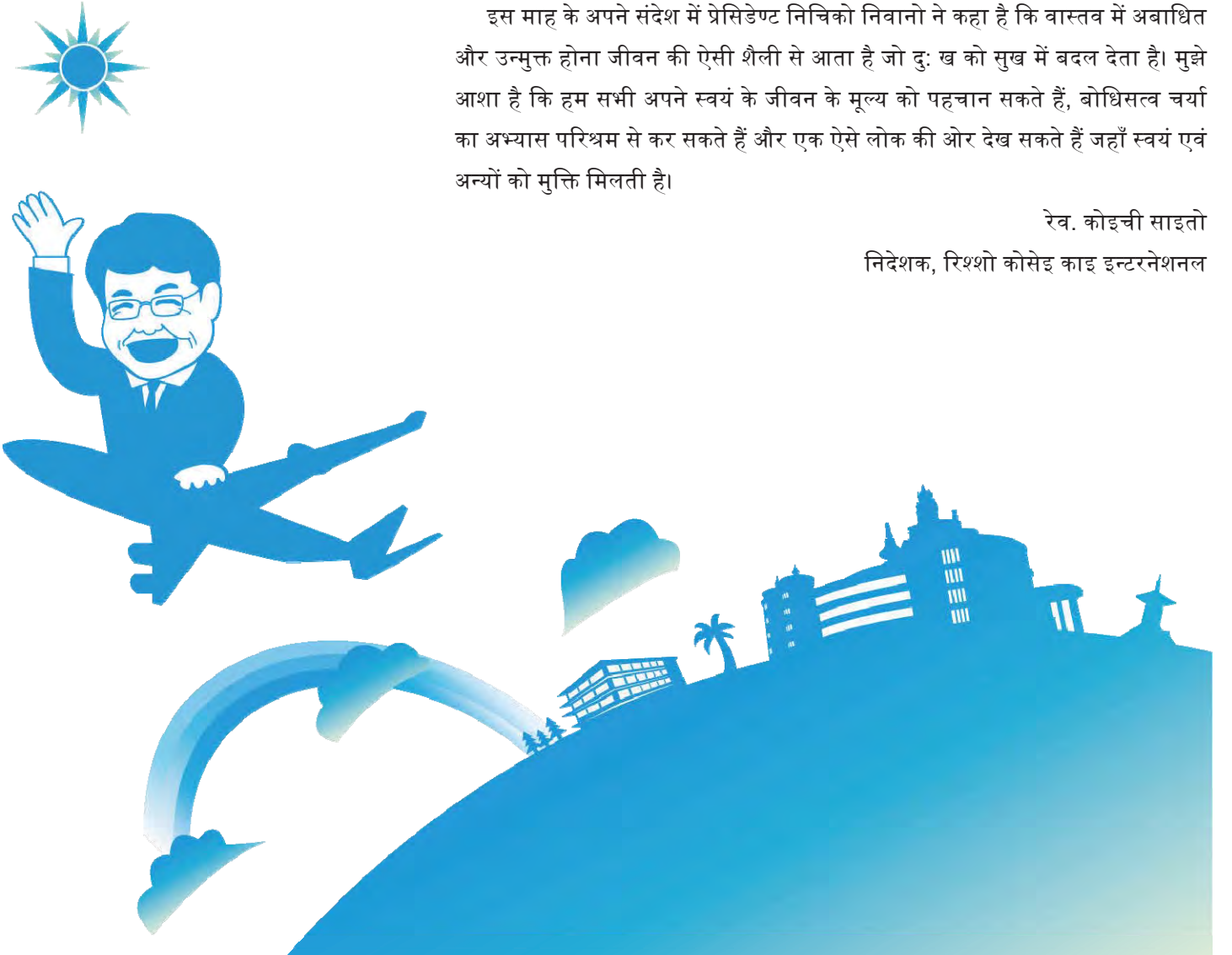
इस माह, रिश्शो कोसेइ काइ संयुक्त राज्य अमेरिका में धर्म के प्रचार प्रसार की साठवाँ वर्षगाँठ मनायेगा। यह संगठन के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार प्रसार में एक नए युग के प्रारंभ का प्रतीक है। संसार भर के सभी संघ सदस्यों के साथ एक मन से, मुझे आशा है कि हम धर्म के और प्रचार प्रसार की दिशा में प्रयास करेंगे।

इस महीने की “आध्यात्मिक यात्रा” में सुश्री कायो नाकागावा जी द्वारा धर्म यात्रा की बात की गई है, जिसको अपने पिता के साथ संबंध में परेशानियाँ हैं। जबसे उसने चीजों को देखने के अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन लाया है और सभी चीजों को अपने लिए एक आवश्यक सबक के रूप में स्वीकार किया है, तबसे वह दूसरों में बुद्ध-स्वभाव को निहित देखने में सक्षम हो गई है। वह अपने पिता के दुःखों को महसूस करने लगी है और आशा है कि उसका पिता के साथ संबंध मधुर होगा। अपनी धर्म यात्रा के बाद उसने अपने पिता के प्रति नए आभार के साथ एक बार फिर उनसे मिलने का निश्चय किया है। जब मैंने सुना कि वह अब अपने पिता को पूरे मन से प्यार करती है, तो मेरा मन गर्मजोशी से भर गया।

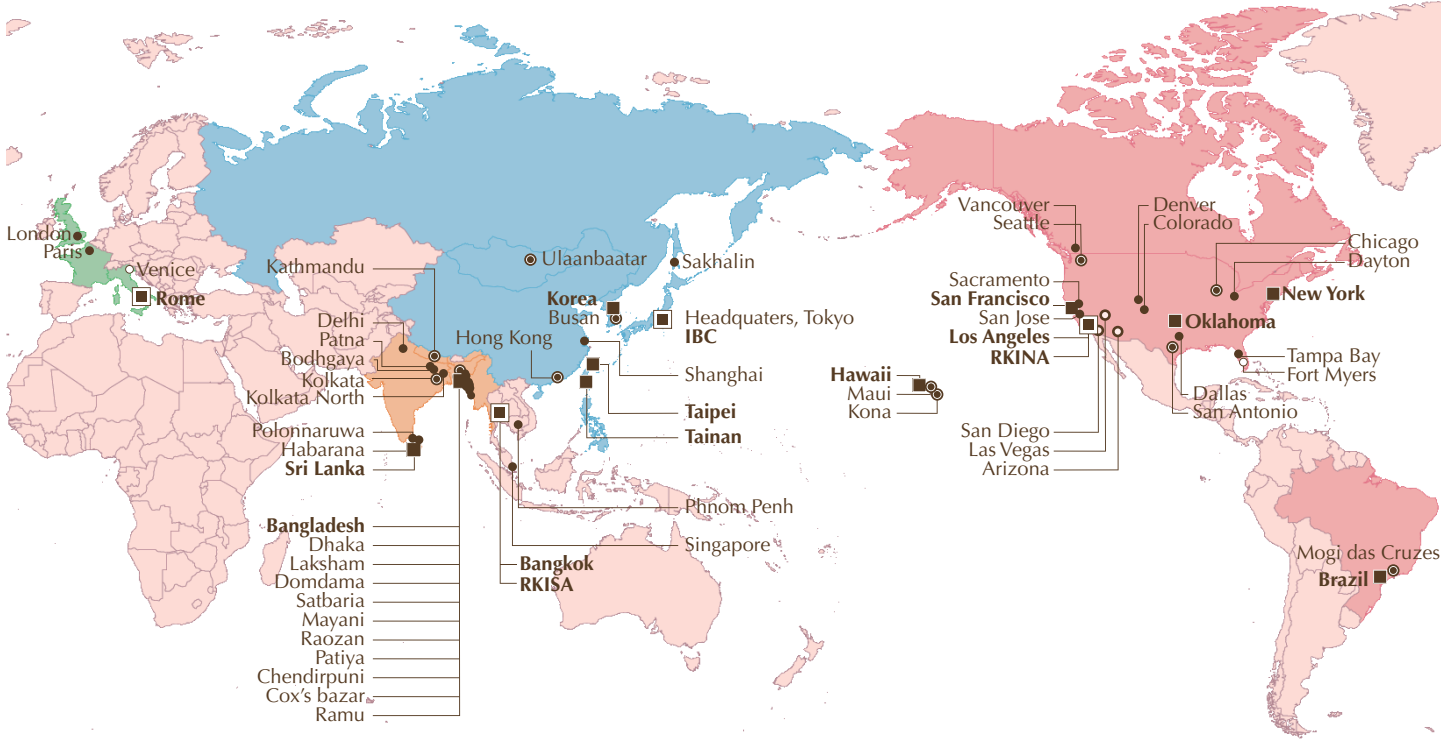
इस माह के अपने संदेश में प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने कहा है कि वास्तव में अबाधित और उन्मुक्त होना जीवन की ऐसी शैली से आता है जो दुःख को सुख में बदल देता है। मुझे आशा है कि हम सभी अपने स्वयं के जीवन के मूल्य को पहचान सकते हैं, बोधिसत्व चर्या का अभ्यास परिश्रम से कर सकते हैं और एक ऐसे लोक की ओर देख सकते हैं जहाँ स्वयं एवं अन्यो को मुक्ति मिलती है।

रेव. कोइची साइतो

निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai International

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
 Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224
 E-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
 Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633
 E-mail: info@rkhawaii.org Website: http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
 Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.
 Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

Location: 2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
 Mailing Address: POBox 33636, CA 90033, U.S.A.
 Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567
 E-mail: rk-la@sbcglobal.net1 Website: http://www.rkina.org/losangeles.html

(Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles)

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

Location: 1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
 Mailing Address: POBox 778, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
 Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437
 E-mail: info@rksf.org Website: http://www.rksf.org

(Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco)

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.
 Tel: 1-212-867-5677
 E-mail: rkny39@gmail.com Website: http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.
 Tel: 1-773-842-5654

E-mail: murakami4838@aol.com Website: http://rkchi.org/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

Website: http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

Location: 2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.
 Mailing Address: POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, U.S.A.
 Tel: 1-405-943-5030 Fax: 1-405-943-5303
 E-mail: rkokdc@gmail.com
 Website: http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809, Denver, CO 80204, U.S.A.
 Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 King Drive, Dayton, OH 45419, U.S.A.
 Website: http://www.rkina-dayton.com/

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A
 Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
 E-mail: info@rkina.org Website: http://www.rkina.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

Location: 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
 Mailing Address: POBox 692042, San Antonio, TX78269, U.S.A.
 Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745
 E-mail: dharmasanantonio@gmail.com
 Website: http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
 Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261
 e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
 Website: http://buddhistlearningcenter.org/

(Please contact RKINA)

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
 CEP 04116-060, Brasil
 Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
 E-mail: risho@terra.com.br Website: http://www.rkk.org.br
 Instagram: https://www.instagram.com/rkkbrasil/
 Facebook: https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
E-mail: rissho@terra.com.br

Korean Rissho Kosei-kai

〒04420大韓民國SEOUL特別市龍山區漢南大路8路6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696
E-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

〒48460大韓民國釜山廣域市南區水營路174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Rissho Kosei-kai of Taipei

台灣台北市中正區衡陽路10號富群資訊大廈4樓
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City, 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 / 886-2-2381-1633 Fax: 886-2-2331-3433
Website: <http://kosei-kai.blogspot.com/>

Rissho Kosei-kai of Tainan

台灣台灣台南市崇明23街45號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City, 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488
E-mail: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang,
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8216 Fax: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur,
Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna

Please contact Rissho Kosei-kai of Kolkata

Rissho Kosei-kai of Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C.73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke,
Khan Reouseykeo, Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang,
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang,
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
E-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka

Tel: 94-11-2982406 Fax: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Please contact Rissho Kosei Dhamma Foundation

Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Chittagong North**Mayani Hoza**

Mayani Barua Para, Mirshari, Chittagong, Bangladesh

Domdama Hoza

Domdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chittagong South**Patiya Hoza**

China Clinic, Patiya, Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Satbaria Hoza

Village: Satbaria Barua Pra, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Chendirpuni Hoza

Village: Chendirpuni, P.O.: Adhunagor, P.S.: Lohagara,
Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No. 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh
Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dupchar, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Tekpara, Sader, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Please contact Rissho Kosei-kai of Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Raozan Shibu

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Branches under the Headquarters**Buddiyskiy khram "Lotos"**

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk, 693005, Russian Federation

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point,
Hong Kong, People's Republic of China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Please contact Rissho Kosei-kai International

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

Location: 15F Express Tower, Peace Avenue, Khoroo-1, Chingeltei
District, Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Mailing Address: POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 E-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

2f Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum, Orkhon
province, Mongolia

Branches under the Headquarters**Rissho Kosei-kai di Roma**

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax: 39-06-48913949 E-mail: roma@rk-euro.org

(Please contact Rissho Kosei-kai di Roma)

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia****Rissho Kosei-kai of Paris****International Buddhist Congregation (IBC)**

Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Sugunami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224